कर्नाटक युद्ध

(महत्वपूर्ण बिंदु)

D-III, paper v

Dr. Amrita kumari

- ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :-भारतीय संदर्भ में हुए कर्नाटक युद्ध की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि ब्रिटेन एवं फ्रांस के बीच मध्यकाल से ही चल रही प्रतिस्पर्धाओं से रही हैं।

भारत में अठारहवीं सदी के मध्य से चले तीन कर्नाटक युद्धों को इस प्रतिस्पर्धा के परिप्रेक्ष्य मे देखा जा सकता है।

1. प्रथम कर्नाटक युद्ध (1746-48)

पृष्ठभूमि व कारण:-

- फ्रेंच गवर्नर डूप्ले द्वारा भारतीय राजनीति में हस्तक्षेप।
- यूरोप में चल रहे अंग्रेजो एवं फ्रांसिसियों के बीच ऑस्ट्रिया के उतराधिकार युद्ध का भारतीय विस्तार।
- अंग्रेज अधिकारी बर्नेट द्वारा कुछ फ्रांसीसी जलपोतों पर कब्जा।
- प्रतिक्रियास्वरूप डूप्ले द्वारा ला बर्डोने की सहायता से मद्रास पर अधिकार करना।

मद्रास पर अधिकार के मुद्दे पर युद्ध की स्थिति बन गयी। नवाब अनवरउद्दीन ने 1748 ई० में फ्रांसीसियों के विरुद्ध सेंट टॉम की लड़ाई लड़ी। इसमें अनवरउद्दीन की हार हुयी। तत्पश्चात एक्स- ला- शापेल की संधि हुई,जिसके तहत फ्रांसीसी ने अंग्रेजों को मद्रास तो वापस कर दिया पर उसके बदले उसे अमेरिका का एक क्षेत्र मिला।

2. द्वितीय कर्नाटक युद्ध (1749-54)

- मूल कारण हैदराबाद एवं कर्नाटक में उतराधिकार के लिए दो गुटों के बीच संघर्ष था।
- हैदराबाद में नासिरजंग ब्रिटिश समर्थित एवं मुजफ्फर जंग फ्रेंच समर्थित था।
- कर्नाटक में अनवरउद्दीन ब्रिटिश समर्थित एवं चंदा साहब फ्रेंच समर्थित था।

दोनों गुटों में 1749 में अंबूर की लड़ाई हुई जिसमें फ्रेंच समर्थित गुट विजयी हुआ।

अनवरउद्दीन मारा गया तथा चंदा साहब नवाब बने। कुछ समय बाद नासिरजंग की जगह हैदरा बाद में फ्रेंच समर्थित मुज़फरजंग नवाब बना। अतः प्रथम स्तर पर फ्रेंच का प्रभाव स्थापित हुआ।

पर कुछ ही समय बाद अनवरउद्दीन के पुत्र मोहम्मद अली जो त्रिचनापल्ली चला गया था,उसने अंग्रेजों के साथ मिलकर चंदा साहब एवं फ्रेंच को हराकर कर्नाटक पर अपनी सत्ता स्थापित की। हैदराबाद पर फ्रेंच प्रभाव अभी बना रहा ।
1756 ईस्वी में अंग्रेज एवं फ्रांसीसीओं के बीच पांडिचेरी की संधि हुई जिसके जिसमें यह तय हुआ कि दोनों एक दूसरे के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करेंगे।

3 तृतीय कर्नाटक युद्ध (1756-63 ईसवी)

- यह युद्ध यूरोप में ब्रिटेन और फ्रांस के बीच चल रहे सप्त वर्षीय युद्ध का भारतीय विस्तार था।
- 1707 ईस्वी में वान्दीवाश लड़ाई हुई जिसमें अंग्रेजी सेना का नेतृत्व जनरल आयरकूट एवं फ्रेंच सेना का नेतृत्व काउंट लाली ने किया,फ्रेंच पराजित हुए ।
- 1761 ईस्वी में ब्रिटिश सेना ने फ्रेंच मुख्यालय पांडिचेरी पर अधिकार कर लिया ।
- 1763 ईस्वी में सप्तवर्षीय युद्ध की समाप्ति पर पेरिस की संधि हुई जिसके तहत पांडिचेरी को फ्रांस को वापस कर दिया गया पर यह तय हुआ कि फ्रेंच भविष्य में किसी भी प्रकार का राजनीतिक हस्तक्षेप नहीं करेंगे और सिर्फ एक व्यापारिक कंपनी बनकर रहेंगे।

महत्त्व:- 1763 ईसवी के इस संधि का एक निर्णायक महत्व है क्योंकि इससे ब्रिटेन के एक मजबूत प्रतिद्वंदी के प्रतिस्पर्धा की समाप्ति हुई ।इसके पूर्व 1759 ईस्वी के बेडरा के युद्ध से डच प्रतिद्वंद्विता समाप्त हो गई थी।अतः अब ब्रिटिश अपने प्रतिद्वंद्वियों से निपट चुके थे और उसे भारतीय परिप्रेक्ष्य में स्वयं को स्थापित एवं प्रसारित करना था । इधर भारतीय परिप्रेक्ष्य में मुगल साम्राज्य के पतन के पश्चात उभर रहा मराठा विकल्प 1761 ईस्वी में पानीपत के तृतीय युद्ध में हार से विकल्प की दौड़ से बाहर हो गया था । अतः अब एक शून्यता की स्थिति थी जिसमें ब्रिटेन को स्वयं को स्थापित करना था।।

1757 में प्लासी विजय के साथ ब्रिटेन अब भारतीय राज्यों में सक्रिय प्रभाव स्थापित करने के लिए उत्सुक था। अंततः कहा जा सकता है कि 1763 की पेरिस संधि भी भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना के क्रम में एक विभाजक वर्ष है।

Thank you